तृतिय अध्याय

राजेंद्र यादवजीके उपन्यासों कीकथावस्तुओं का संक्षिप्त परिचय

राजेंद्र यादव ने कुलमिलाकर सात उपन्यास लिखे हैं। उन्होंने ` एक इंच मुस्कान ` उपन्यास पत्नी मन्नू भंडारीके साथ मिलकर लिखा है। उनके सातों उपन्यासों में परिवार के भिन्न भिन्न रुप दिखाई देते हैं। विषय को समझने की दृष्टि से यहाँ मैं उनके विभिन्न उपन्यासों का संक्षिप्त परिचय देना उचित समझती हूँ जो निम्नलिखित प्रकार से है।

सारा आकाश (प्रेत बोलते है)

` सारा आकाश ` उपन्यास राजेंद्र यादव का पहला उपन्यास है। यह उपन्यास मूल रुप में ` प्रेत बोलते है ` नाम से सन १९५१ में लिखा गया था। उस समय सीमित लोगों ने उसे पढा किंतु वह छपकर बाजार में नहीं आया। दस साल बाद इसी उपन्यास को राजेंद्र यादव ने नये सिरे से लिखा और ` सारा - आकाश ` के नाम से सन १९६० में प्रकाशित किया। उपन्यास का नामकरण करते समय अतीत में यादवजी के किशोर मनपर अंकित दिनकर की पंक्तियाँ घूम रही थी --

` सेनानी, करो प्रयाण अभय ,भावी इतिहास तुम्हारा है
ये नक्षत्र अमा के बुझते है, सारा आकाश तुम्हारा है ` ।

इन पंक्तियों में जो अदम्य विश्वास और आशा है, उसका ` सारा आकाश ` में अभाव है। साहस एवं विश्वास उपन्यास के नायक समर में दिखाई नहीं देता। वह तो उपन्यासके अंत में पहुँचकर आत्महत्या करने या भाग खडे होने की बातें सोचने लगता है। इस परिस्थिति में घबराकर जब वह उपर देखने लगता है ` तो सारा आकाश डग-डग करके घूमने लग जाता है[१]। वह अपने ` समर ` नाम के अनुरुप साहसपूर्ण संघर्ष का प्रतीक बनकर नहीं उभर पाता।

---

१ राजेंद्र यादव - ` सारा आकाश ` - पृ.२४५

प्रस्तुत उपन्यास दो भागों में विभक्त है। ' पहला भाग ' सांझ है जो अमा की सांझ है, जिसकी दसों दिशाएँ बिना उत्तरवाली है। किन्तु पूर्वार्ध्द के अंत में ' ये नरवत अमा के बुझते है ' की स्थिति को ओर पहुंचने वाली घटना तक पहुँच जाते हैं। पूर्वाध्द का अंतिम वाक्य इसी स्थिति को प्रतीकात्मक ढंग से व्यक्त करता है -- ' बाहर किरणों की धारियाँ आडी - तिरछी बुनाई की तरह छा गई थी '[२]।

उपन्यास का उत्तरार्ध्द सुबह ' है। इसमें बिना उत्तरवाली स्थिति ' तो नही रही, किन्तु दसों दिशाएँ प्रश्नपीडित बनी हुई है।

' सारा आकाश ' की पृष्ठभूमि भारतीय प्रजातंत्र के पहले चुनाव से पहले की है। इस पृष्ठभूमि की वास्तविकता निम्न-मध्यवर्ग के संदर्भ में आज भी बहुत अधिक नहीं बदली है। इस उपन्यास की समस्या के दो पहलू है -- ' सारा आकाश ' प्रमुखत: निम्नमध्यवर्गीय युवक के अस्तित्व के संघर्ष को कहानी है। यह घर के बाहरकी समस्या है। घर में इस समस्या का दूसरा पहलू साथ-साथ विकसित होते रहते है। फिर भी पति और पत्नी के बीच की संवादहीनता का पहलू अधिक मुखर है, इस लिए पहले उसीपर ध्यान आकर्षित होता है।

पति-पत्नी के बीच संवादहीनता के मूल में अनेक कारण है। सबसे पहला कारण समर का मानसिक संस्कार है। ब्रह्मचर्य संबंधी अतिरेकी धारणा के कारण समर ने कभी आजन्म ब्रह्मचारी रहने की प्रतिज्ञा की थी। मगर माता - पिता के दबाव के कारण वह प्रभा से विवाह कर लेता है। विवाह हो जाने के बाद नारी को वह सहगामिनी नहीं समझता पढ - लिख लेने के कारण वह परदाप्रथा को अच्छा न समझते हुए भी, बुजुर्गो की मानमर्यादा को बनाए रखने के लिए उसे आवश्यक समझकर प्रभापर इस बात के कारण भी

---

२ राजेंद्र यादव - ' सारा आकाश ' - पृ.१०६

नाराज रहता है कि वह घुंघट नहीं करती। वह प्रभा को बराबरी का दर्जा देने की बात नहीं सोचता। सुहाग रात की रात को वह सोचता है -- " आज तो बिल्ली मुझे ही मारनी है "[३] वह पत्नी के संबंध में सोचता है -- " यह वह बंदर है, जो डंडे के आगे नाचता है "[४] वह इस बात की प्रतिज्ञा करता है कि - " देखें कौन टूटता है "[५]। इस प्रकार की दृष्टि पति-पत्नी के बीच संवाद की स्थिति पैदा हो सकने में कैसे सहायक हो सकती है पति - पत्नी का स्वस्थ नाता, समता और मित्रता का नाता है। एक दूसरे के सुख-दुख से सुखी और दु:खी होने का नाता है। इसके विपरीत समर को तब खुशी होती है, जबकि मतीजी के पैदा होने पर घर में काम बढ जाता है।

समर और प्रभा के बीच संवादहीनता का दूसरा कारण - उन्हें अपनी रुचि के अनुकूल जीवन - साथी चुनने का अधिकार प्राप्त नहीं हुआ था।

` सारा आकाश` के संवादहीनता का तीसरा कारण संयुक्त परिवार की प्रथा है। इसके बारे में यह कहा जा सकता है कि, संयुक्त परिवार के जाने कितने रिवाज - लिहाज और सामाजिक आर्थिक दबाव होते हैं, जहाँ पति-पत्नी एक दूसरे-से सीधे संवाद नहीं कर पाते। संयुक्त परिवार में माँ अपनी बहू के प्रति सामान्यत: माँ का सा व्यवहार नहीं कर पाती। यही बात हमें ` सारा आकाश` में दिखाई देती है। प्रभा अकेली घर का काम-काज कर लेती है। पति का प्यार भी उसे नहीं मिलता।

समर के निम्नमध्यवर्गीय परिवार में पैसों की तंगी हमेशा रहती है। परिवार में कमानेवाला एक आदमी खानेवाले दस आदमी। समर के बडे भाई

---

३ राजेंद्र यादव - सारा आकाश - पृ.१९

४ राजेंद्र यादव - सारा आकाश - पृ.१९

५ राजेंद्र यादव - सारा आकाश - पृ.१९

धीरज महीना नब्बे रुपयें पाते हैं और पिता को पेंशन के पच्चीस रुपये मिलते है। माँ-बाप अपने कमानेवाले बेटे की बहू का अधिक ध्यान रखते हैं। इसलिए धीरज की पत्नी के लिए साडी तो आती है, किंतु समर की पत्नी फटी धोती की ओर किसी का ध्यानही नहीं जाता । लेकिन जब समर नौकरी पर लग जाता है, तो घरवालों का क्या समर और प्रभा के प्रति उदार हो जाता है। सास प्रभा बहू को बुला-बुलाकर चूडियाँ पहनाती है, लेकिन समर की नौकरी छूट जानेपर क्या बदल जाता है। समर नौकरी छूटने की वजह से आत्महत्या करने की बात सोचता है।

दूसरी ओर समर की बहन मुन्नी की त्रासदी बेहद दर्दनाक है। उसकी यातना प्रभा से बढी-चढी है। प्रभा को एक साल बाद पति का प्यार मिल जाता है,लेकिन मुन्नीका दुर्भाग्य कभी खत्म नहीं होता। उसका पति उस पर अमानवीय अत्याचार करता है, खाना नहीं देता इतनीही बात नहीं, उसने रखैल भी रखी है। प्रतिरोध करने पर उसे बेंत से मारा जाता है। एक बार मायके आकर फिर मुन्नी उस नरक में जाना नहीं चाहती, मगर माँ-बाप लोक-लाज की दुहाई देकर ससुराल भेजते है लेकिन कुछ दिनों के बाद खबर मिलती है कि वह मर गई।

समर की मामी अनपढ है। प्रभा शिक्षित है, वह परदा नहीं करती इसलिए वह जलती रहती है बार बार प्रभा को ताने देती है। मगर प्रभा ऐसे प्रतिकूल परिस्थिति में रहकर पति का मन जीत लेती है। वह संभाषण नहीं करता था मगर वह पति की सुख-सुविधाओंका खयाल रखती थी। पति की प्रतिष्ठा के प्रति जागरूक थी। मैके में अपने पति की निंदा सहन नहीं करती। आत्मसम्मान की भावना उसमें उसके साथ भी थी। प्रभा ने ही समर को पढाई जारी रखने के लिए प्रेरित किया। अगर प्रभा समर की हिम्मत को न ललकारती तो वह कभी का टूट जाता ' और चाहे तुम्हारे साथ कोई

हो या न हो मैं तो हूँही [६] अत: स्पष्ट है कि एक दूसरे के दु:ख-सुख में सहभागी होकर समर और प्रभा ने संवाद की स्थिति की ओर कदम बढाया है।

' सारा आकाश ' के कथ्य की चर्चा करने के बाद शिल्पपक्ष को देखते है कि ' सारा आकाश ' का कथानक दो भागों में विभक्त है -- पूर्वाध्द और उत्तरार्ध्द। ये दोनों भाग क्रमश: सांझ एवं सुबह के रूप में है। दोनों भागो में दस दस परिच्छेद है। उपन्यास का प्रारंभ ही सुहागरात को भाग खडे होने की घटनासे संबंधित होने से पाठकों के मनमें कुतूहल जागृत होता है। पात्रों की दृष्टिसे समर, प्रभा, मुन्नी महत्वपूर्ण है। अन्य पात्र भाभी, समर के माता - पिता, छोटा भाई कुंवर बडा भाई धीरज, शिरीष, नवलकिशोर कथावस्तु को सहयोग दिलाने में महत्वपूर्ण स्थान रखते है।

भाषा शैली की दृष्टिसे आत्मकथनात्मक शैली का प्रयोग किया गया है। कहीं स्थानों पर प्रतिकों तथा बिंबों की सृष्टि की गई है। काव्यात्मक और रोमानी भाषा में संस्कृत और उर्दूके मेल से प्रभाव और मिठास आगई है। अल्पशिक्षित पात्रों की भाषा में मुहावरों और लोकोक्तियों का प्रयोग हुआ है। कुल-मिलाकर ' सारा आकाश ' की भाषा प्रसंगानुरुप और अभिव्यक्ति में समर्थ है।

' सारा आकाश ' के बारेमें यही कहा जा सकता है कि यादवजी का यह पहला उपन्यास होते हुए भी प्रौढ है। पहली कृति से ही यदि इतनी प्रसिध्दि मिली यह उपन्यास के परिक्वता एवं पठनीयता के दर्शन सुखात है।

---

६ राजेंद्र यादव - सारा आकाश - पृ.१९९

(२) उखडे हुए लोग --

`उखडे हुए लोग` यह उपन्यास `सारा आकाश` के मूल रुप `प्रेत बोलते है` के बाद लिखा गया था। लेकिन यह सारा आकाश के पूर्व प्रकाशित हुआ। सन १९५४-५५ के दो वर्ष में लिखा गया यह उपन्यास सन १९५६ में प्रकाशित हुआ। प्रकाशित होते ही सफल लेखक के रुप में राजेंद्र यादवजी को साहित्य संसार में प्रतिष्ठित कर दिया। छठे शतक का यह अत्यंत महत्वपूर्ण उपन्यास है।

`सारा आकाश` के समान ही `उखडे हुए लोग` उपन्यास में मध्यवर्गीय जीवन के संघर्ष को लक्ष्य बनाया गया है। यह संघर्ष परिवार की दृष्टि से प्रेम और विवाह की समस्या को लेकर है, तथा साथ ही बाहर के आर्थिक शोषण की समस्या को भी पूर्ण रुप से उभारने का प्रयत्न किया गया है।

प्रस्तुत उपन्यास की कथावस्तु कुल-मिलाकर सात-दिनों की कहानी है। इस कहानी को चौदह परिच्छेदों में विभक्त किया गया है। तथा इन परिच्छदों को चाँदनी `प्रेम और बंदूक की गोली`, `आह से उपजा होगा गान` आदि दिए गये है। कथानक को उपस्थित करते हुए फ्लेश-बॅक, फॅटसी, टेक ओवर, स्वप्नचित्र आदि तंत्रों का सुंदरता के साथ प्रयोग किया गया है। सूरज की पूर्वजीवन की कथा स्मृति आदि के रुप में उपस्थित की गई है। `यही होता आया है` शीर्षक परिच्छेद लगभग बीस पृष्ठों के लम्बे पत्र के रुप में है। इसी पत्र के अन्दर जया के सपने का उल्लेख है जिसमें जया के व्यक्तित्व के दो पहलू दो चित्र व्यक्तियों के रुप में उपस्थित किए गये है। घरसे भागने से पूर्व के तनाव में उसने सपना देखा।

उपन्यास में बहुत सारे पात्र है। उनमें प्रमुखतम पात्र है, शरद, जया, देशबन्धु, सूरज तथा पद्मा है। इन पात्रों में पूँजीपति चरित्र के रुप में देशबन्धु का चरित्र कुछ बातों को छोडकर अत्यन्त सधे हाथों से अंकित किया गया है। यह चरित्र पूँजीवादी व्यवस्था के अंतर्गत पनपनेवाले नेता का भी चरित्र है। इसे

पूँजीपती कम नेता का चरित्र कहा जा सकता है। इस उपन्यास का दूसरा अविस्मरणीय चरित्र सूरज का है। अपने लिए अन्य पुरुष का प्रयोग करनेवाला यह चरित्र विषमताओंमें पला है, और सूरजमुखी के फूल का सूरज बनने से वंचित रहा है। इन बातों के बावजूद जीवनशक्तिका अटूट स्त्रोत उसके भीतर भरपूर है। सूरज को हार्ट-टू-हार्ट सम्बन्ध स्थापित करने में विश्वास है। यदि ऐसा सम्बन्ध स्थापित न किया जा सके तो वह उस सम्बन्ध को `कट ऑफ` करने में देर नहीं लगाता। अपनी आदत के अनुसार बेलाग बात करना, उसके चरित्र की विशेषता है। कुछ कारणोंसे इस सूरज की आग ठंडी-सी पड गई थी किन्तु मजदूरों पर किए गए गोली चालान के कारण वह आग फिर से धधक उठती है। उसका सोया हुआ व्यक्तित्व जाग उठता है, और अपने लिए उत्तम पुरुष का प्रयोग करने लगता है।

शरद तथा जया, इन्हीं मुख्य पात्रों को लेकर उपन्यास आगे बढता है, वे दोनों भी रुढियों के खिलाफ आवाज उठाने का प्रयत्न करते है तथा पहला कदम भी उठाते है। युध्दोत्तरकालीन स्त्रीपुरुष के बिगडते बदलते बनते सम्बन्ध, युध्द से पूर्व स्त्रीपुरुष के सम्बन्ध रुढियों से नियंत्रित थे। इन रुढियों को तोडकर विना विवाह करते शरद-जया एकसाथ रहने का फैसला करते है। शरद और जया की दृष्टि में किसी एक के व्यक्तित्व के विलीन या गौण होने का प्रश्न नहीं है। इसीलिए, पारंपारिक पध्दति से `जया शरद` भले ही ठीक हो, किन्तु स्त्री और पुरुष दोनों के व्यक्तित्वों को समान मान लेने पर प्रश्न उठाया जा सकता है कि फिर `शरद जया` क्यों नहीं। इसीलिए न `जया शरद ठीक है और न ही शरद जया ठीक है। ठीक तो केवल यह है कि प्रेम के कारण शरद और जया एक दूसरे के लिए पूरक और प्रेरक है। इसी दृष्टिसे शरद ने जया को जीवनसंगिनी के रुप में अपनाने से पूर्व अपनी डायरी में लिखा था --` दो इकाइयों के सामूहिक जीवन की सामाजिक स्वीकृति का नाम विवाह `[७]। और रुढियों को तोडकर बिना विवाह करते जया -

---

७ राजेंद्र यादव - उखडे हुए लोग - पृ.२८

7526

शरद एकसाथ रहने का फैसला लेते है , दोनों समस्तरीय मित्रता के नाते हरएकको अपना व्यक्तित्व है ऐसा समझकर वे एकठ्ठा आते है। लेकिन हमारा समाज इन सम्बन्धों को मानता नहीं, इसलिए वे दोनों भाग कर दूसरे गाँव आ जाते हैं। देशबन्धुजी के यहाँ नौकरी करने के लिए शरद जाता है वहाँ भी अपने मतोंका आग्रह ही रखता है।

उपन्यास के मुख्य पात्रों में देशबन्धु और सूरज के चरित्र का अंकन बडी सफलता से लेखक ने किया है। उपन्यास के गौण पात्रों में पद्मा का चरित्र सफल बना हुआ है। पद्मा यह दर्द की मूरत है,उसे सिर्फ दर्द ही पसंद है, ऐसे चरित्र उसे आकर्षित करते है जिन्होंने कष्ट सहे हैं, दर्द सहे है। दर्द की वेदना की छाया उसके चेहरे से हटती नहीं है। देशबन्धु के यहाँ पार्टी में थी फूलों की राजकुमारी पद्मा के होंगेपर से तडपती घायल मुस्कान हट न पायी थी। इस घायल मुस्कान का रहस्य उपन्यास के अंत में खुल जाता है।

दूसरा महत्वपूर्ण गौरण पात्र ' मायादेवी ' का है। मायादेवी पद्मा की माँ है, लेकिन ' माँ ' शब्द को कलंक लगानेवाली है। उसमें ममता का अंश दिखाई नहीं देता । उसका चरित्र वासनाओं से भरा हुआ है। स्वतंत्रता मिलने के पूर्व गाँधीजी के आश्रम में देशबन्धु एवं मायादेवी की भेंट हुई। मायादेवी देशबन्धु से प्रेम करती थी मगर देशबन्धु ने अपना विवाह हुआ है यह बात मायादेवीसे छिपाकर रखी थी। यह बात समजने पर मायादेवी दु:खित हुई मगर उसने विवाह किया फिर भी वह उनके प्रेम में इतनी फँस गई थी कि विवाह के बादभी देशबन्धुजी के साथ,अनैतिक सम्बन्ध रखे अपनी संपत्ती सब कुछ उनपर न्योछावर कर दी। देशबन्धु ने मायादेवी के संपत्तीपर ' सत्या मिल' एवं ' स्वदेश महल' खडा कर दिया। इतना ही नहीं दोनों ने मिलकर मायादेवी के पति को जहर देकर मार दिया। मायादेवी को देशबन्धु ' रखेल ' एवं ' जगहँसाई ' ही मिली।

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR.

`उखडे हुए लोग` में जिसप्रकार रुढियुक्त विवाह के बारे में चर्चा की गई है उसीसमान आर्थिक समस्याओं को भी लिया गया है। उपन्यास में शोषक के रुप में देशबन्धु के चरित्र को उपस्थित किया है। वे आर्थिक क्षेत्र एवं राजनीतिक क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण व्यक्ति है,इसलिए कई लोग इसे राजनीतिक उपन्यास मानते है। देशभक्ति को भी उन्होंने व्यापार का अंग माना था। सन १९४२ में भारत छोडो आंदोलन में जेल होने पर माफी मांगकर छुटकारा पाया था, पर वे खुद को गांधीजी के सच्चे अनुयायी मानते है। मशीनों के विरोधी होते हुए भी कारखानों के मालिक है। कभी दान देते है तो उसका पता बाँए हाथ को भी नहीं लगता, उनका दान भी व्यापारी दान था।

उनमें परिस्थिति को संभालने की अद्भुत क्षमता है। `सत्या मिल` में गोली चलने पर वे मजदूरों के बीच साहस के साथ पहुँचते है। अपने बेटे सत्यकुमार से न बनने का नाटक रचते है। मजदूरों के खून को रफा-दफा कर डालने के लिए वे मंत्री के सत्कार में चायपार्टी का आयोजन करते है। मजदूरों के मृत्यू के प्रति ही नहीं अपितु अपने ही पक्ष के श्रेष्ठ नेता वल्लभभाई पटेल के स्वर्गवास के समाचार पार्टी के एकत्रित लोगों को इसलिए नहीं देते कि, पार्टी की सारी तैयारीयाँ व्यर्थ ही चली जाएगी।

पूँजीपति के चरित्र की अनिवार्य कमजोरी रुपया होती है, वह कमजोरी देशबन्धु में दिखाई देती है अर्थलोलुपता के साथ साथ उनमें काम लोलुपता भी दिखाई है। काम की दृष्टि से पतन की परमसीमापर पहुँच गये है,उन्होंने अपनी पत्नुवधूको भी नहीं छोडा, अपनी बेटी पद्मापर बलात्कार करने तक उनकी कामेच्छा बह गई।

इस प्रकार प्रस्तुत उपन्यास में विवाह समस्या,कामसमस्या,आर्थिक समस्या, मजदूरों की समस्यापर प्रकाश डालने की कोशिश यादवजी ने की है। इस

तरह` उखडे हुए लोग` का कथ्य बहुआयामी है। उपन्यास के शिल्प में नवीनता दिखाई देती है। विभिन्न प्रकरणों का नामकरण लेखक ने इतना आकर्षक किया है कि पाठकों का कौतुहल जागृत होता है। ` हैल्टेल`, ` तीन कोनोंवाला रहस्य `,` कुर्सी घूमती है,` इफ्तदार इश्क है `, आदि इसके उदाहरण है। वाद-विवाद के व्दारा लेखक ने उपन्यास के तथ्यपर प्रकाश डालने का प्रयत्न किया है। लेखक की विचारधारा उपन्यास में साम्यवाद की ओर झुकती हुई प्रतीत होती है। नेता मैय्या के माध्यम से उन्होंने पूँजीवादी लोगों के गुप्त जीवन को अनावृत्त करके रखा है, जिससे उनकी शोषण वृत्ति का परिचय मिल जाता है।

निष्कर्ष रुप में` उखडे हुए लोग` स्वातंत्र्योत्तर कालीन उपन्यासों में अपना एक विशिष्ट स्थान रखता है। समाज एवं देश में व्याप्त पाखण्डों छल-छद्मों, रुढिवादी मान्यताओं के प्रति यहाँ खुला विद्रोह करवाया है।

(३) कुलटा —

` कुलटा` राजेंद्र यादव का तीसरा उपन्यास है। इस उपन्यास में मध्यम वर्ग की बीनू ने मिसेज तेजपाल कोलडी घृणा के साथ` कुलटा` सह दिया है। मिसेज तेजपाल सम्बन्धी अपनी स्मृतियों को उपस्थित करके निवेदक राजन ने बीनू की मध्यमवर्गीय धारणापर बडी सफलता के साथ प्रश्नचिन्ह लगाया है।

मिसेज तेजपाल बर्मी माँ और पंजाबी पिता की पैदाइश थी। जब ये पन्द्रह वर्ष की थीं, वहाँ बाम्बिंग हुई। भगदड में माँ छूट गयी, बचे हुए लोग किसी तरह दिल्ली पहुँचे। बचपन में लडकी होने के बावजूद उनका घर में बडा रोब था। मिसेज तेजपाल में शुरु से ही श्रेष्ठता का अहंभाव विकसित हुआ था। यही आगे बाद में तेजपाल से मुठभेड में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता रहा। वे खुद अनुभव करती है --` पर उन लोगों ने मेरा बडा नुकसान कर

दिया । अब अगर कोई मेरी इच्छा पूरी नहीं होती तो मन होता है गोली मार लूँ ...' इसके अतिरिक्त उसके व्यक्तित्व में बेहद खुलापन था । गाने और हँसने के शौक ने कालिज जीवन में उसका नाम 'झूमिझूमि झूमि मुस्काति जात' रखा दिया था, ऐसा यह स्वच्छंदतावादी व्यक्तित्व मिलिटरी के कथित स्वतंत्र और औपचारिक वातावरण में मिसफिट ठहर गया । टॉल्स्टाय के उपन्यास , शॉ के नाटक, चेखव की कहानियाँ पढनेवाली लडकी थी इसलिए सामान्य लडकियों से वह अलग स्वभाव की थी । सामान्य लडकियों से निश्चय ही बेहतर है । मिसेज तेजपाल को अपने आसपास के औपचारिक,यांत्रिक और एकरस वातावरण से जबरदस्त शिकायत है । यहाँ आदमियों को क्लब,केबरे,रेस या ब्रिज से फुरसत नहीं मिलती । बातचित के विषय प्राय: अफसरों के क्रियाकलाप था किसी के ट्रांसफर और प्रमोशन वगैरेह की होती है । रोज वही बातचित,रोज वही मजाक,रोज वही तनी हुई रीढे और अकडी हुई गर्दने । नपीतुली चाल, नपी-तुली हँसी,नपातुला मनोरंजन, आप लगातार एक दूसरे के यहाँ चार साल जाइए, वही पहले दिनवाली फार्मैलिटी वही तकल्लुफ वही औपचारिकता लगता ही नहीं, जैसे आदमी मिल रहे हों । कठपुतलों की जिन्दगी .... जिनकी हर हरकत पहले से तय हो .... । औरतों का हाल और भी गुजरा हुआ है, खाना और कपडा के अलावा जैसे कुछ जानती ही नहीं । दैनिक अखबार उस दिन खोलती है जिस दिन सिनेमा जाना है । बाहर से जितनी आधुनिक है, भीतर से उतनी ही रुढिवादी '[९] । मिसेज तेजपाल का खुलापन उन्हें फूटी आँख नही सुहाता । उनका जोर से गाना, आधुनिक ढंग से कपडे पहनना या कुण्डाविहीन चाल ढाल वगैरह अन्य अफसरों की पत्नियों को इस कदर अखरता है कि 'ग्रामोफोन ' फ्लर्ट, फिल्म स्टार्स,आदि सम्बोधन देकर अपनी कुढन शांत करती है । तथा मिसेज तेजपाल के पति मिस्टर तेजपाल का स्वभाव मिसेज तेजपाल के अनुकूल

---

९ मिसेज तेजपाल (म्यूर पेपर बैक्स) पृ.२८

नहीं था । इसलिए इन दोनों के बीच रस्साकशी जैसी कोई चीज चली आई थी । मेजर तेजपाल के व्यक्तित्व का प्रतीक गोलियोंका फूल है। उनका चेहरा गोलियों के फूल का आतंक पैदा करनेवाला था । इस फूल की आतंकास्पद छाया में जीना मिसेज तेजपाल के लिए कठिण शाबित हो रहा था क्यों कि उन दोनों की अभिरुचियाँ एक-दूसरे से काफी भिन्न थीं। परिवेश और पति की मानसिकता के दबाव से जहाँ मिसेज तेजपाल एक ओर कुछ समझौते करातो है, अपने कुछ शौकों को तिलांजली दे देती है, वहीं कुछ मदों पर उनका क्या प्रतिक्रियात्मक और उग्र हो जाता था। वह विद्रोह करना चाहती है , अपने चारों ओर के शिष्टाचार के वातावरण को तोडने के लिए गाने गाने लगती है। उसके गाने का एक उद्देश्य मेजर तेजपाल को तंग करना भी था । उसका हमेशा गाते रहना ,गुनगुनाते रहना मेजर तेजपाल के आतंक के विरुध्द प्रतिक्रिया का भी परिणाम है, जब तेजपाल ने कहा -- ' इसका गाना सुनते - सुनते मैं आजिज आ गया हूँ लेकिन मुझे इसके बाल बडे खूबसूरत लगते हैं ,'[१०] तो अगले ही दिन मिसेज तेजपाल ने अपने बाल कटा डाले। उसके बाद वह अपने बालों को याद करके रोई भी। दूसरों के नियंत्रण से मुक्त रहने की इच्छा उसमें कभी कभी विचित्र रूप में प्रकट होती रहती थी। बीनू के घर में मेजर तेजपाल के कुछ गाकर सुनाने के लिए कहने पर वह इन्कार कर देती है। यही वजह है कि राजेन के आग्रह को भी वह पहली बार अस्वीकार कर देती है -- ' तो जिंदगी भर दूसरों के मन से ही गाती रहूँ'[११]।

मिस्टर तेजपाल का स्वभाव आतंक निर्माण करनेवाला है। कभी कभी वे मिसेज तेजपाल पर हाथ भी चलाते है। पति का संग उसे असह्य हो रहा था,

---

१० राजेंद्र यादव - कुलटा - पृ.४१

११ राजेंद्र यादव - कुलटा - पृ.४६

इसलिए उन्हें जो चीज अप्रिय है, वह मिसेज तेजपाल को प्रिय होती। पति को चिढाने के लिए ही वह जीन्स वगैरा कपडे पहन लेती है। जब कभी आपसी बातचित में तेजपाल का कोई मजाक उनके प्रति होता है, उनकी प्रतिक्रिया अजब होती रहती थी। इसका परिणाम यही होता दोनों में से कोई एक हारकर टूट जाता या कोई एक मैदान छोड देता। तनाव की टूट जाने की स्थिति में पहुँचकर मिसेज तेजपाल वायलिन वाले प्रेमी के पास चली जाती है। जाने से पूर्व उसने मेजर तेजपाल को पत्र लिखा था, शायद इस पत्र में उनके पुरुषत्वपर शंका व्यक्त की गई थी। इस शंका के कारण अपमानित तेजपाल पागल हो जाते है। उनकी अतिरेक पूर्ण कठोरता इसी पुरुषत्व की कमी की क्षतिपूर्ति है। मिसेज तेजपाल का यूँ चला जाना विवाह की संस्था को खुली चुनौती है बीनू जैसी मध्यमवर्गीय नारी की दृष्टि से वह 'कुलटा' मानी जाती है। असल में मिसेज तेजपाल नारीत्व की परम्परागत सलज्ज और शालीन इमेज को तोडती है, इस लिए पुराने विचारों के लोगों का क्षोभ स्वाभाविक है। नैरेटर राजेन के संस्कार भी नारीत्व को शालीनता और संकोच के साथ देखना चाहते है। दरअसल आधुनिक नारी की स्वतंत्रता की तडप को वह सामने लाती है।

प्रस्तुत उपन्यास की कथावस्तु फ्लेशबैक पध्दति से प्रस्तुत की गयी है। नैरेटर राजेन स्पेशल ट्रेनिंग के लिए दुबारा कलकत्ता आया, उसे मिस्टर तेजपाल पागल होने का समाचार मिला और उसे दोनों से सम्बन्धित वह घटनाएँ याद आई।

उपन्यास में प्रमुखतम् पात्र मिसेज तेजपाल है। उपन्यास की भाषाशैली ओजस्वी एवं सशक्त है। मनोविश्लेषण सार्थक शब्द रचना, महीन से महीन देख लेनेवाली दृष्टि, कथनपध्दति इन्हीं दृष्टि से यह उपन्यास लघु होते हुए भी प्रभावशाली बना है।

(४) शह और मात --

' शह और मात ' राजेंद्र यादव जी का चौथा उपन्यास है। यह उपन्यास कलाकार के व्यक्तित्व की समस्याओं को लेकर लिखा गया है। उनके साहित्य में कलाकार पात्रों की संख्या किसी भी अन्य हिन्दी लेखक के साहित्य के कलाकार पात्रों से अधिक है। इस उपन्यास में लेखक और व्यक्ति के व्दंव्द का चित्रण है, इस व्दन्व्द में व्यक्ति की हार हो जाती है।

इस उपन्यास के प्रमुखतम पात्र उदय और सुजाता है। उदय के सम्पर्क में आने के बाद सुजाता की इक्यावन दिनों की मनस्थितिका चित्रण इसमें किया है। काल की दृष्टि से सोमवार तीन जून से मंगलवार तेईस जुलाई तक की मानसिकता डायरी के बहाने सामने आती है वहाँ लेखकीय व्यक्तित्व भी डायरी नुमा है। उदय तथा सुजाता की बातचित में लेखन सम्बन्धी अनेक समस्याओं तथा उलझनों पर गंभीर विचार विमर्श हुआ है। वे दोनों अनुभूतियों और संवेगों से एकदम निर्विकार न रहते हुए भी बौध्दिकता से अनुशासित होते हुए दिखाई देते है। लेखकीय व्यक्तित्व की समस्याको उपस्थित करने के लिए उदय और सुजाता को चुना गया है। उदय का व्यक्तित्व लेखकीय है लेखक के लिए -- ' क्रूरता एवं ईमानदारी इन दो बातों को वह महत्वपूर्ण मानता है। क्रूरता का मतलब ' तटस्थता ', अपने पात्रों के एवं विषयों के सुख दु:ख से हास-परिहास से लेखक ने बिलकुल तटस्थ एवं निर्लिप्त रहना चाहिए।[१२] ' वह अपने संपर्क में आनेवाले हर विषय का तटस्थतापूर्वक अध्ययन करता है। इसलिए वह विषय का निरीक्षण करता है, उस में वह निस्संगता को जरुरी मानता है, इसलिए सुजाता सोचती है -- ' मुसीबत है लेखक होना भी। जिंदगी की हर बात को बस लिखने की दृष्टि से

---

१२ राजेंद्र यादव - शह और मात - पृ.१३०

सोचना "[१३] लेखकीय व्यक्तित्व की निस्संगता के कारण ही सुजाता रोती हुई प्रिंसेस के साथ तादात्म्य नहीं हो पाती। उदय के संदर्भ में भी सुजाता अध्ययन करने के लिए चाल चलती है " चाल चलते हुए वह अपने मन को समझा लेती है -- " बिना चारा डाले कबूतर पास कैसे आयेगा"[१४]। ऐसीही चाल उदय सुजाता के व्यक्तित्व का अध्ययन करने के लिए चलता है, लेखक आखिर जासूस है। जिज्ञासा की पूर्ति के लिए विषय के अंतर्तम भाग में पहुँचने के लिए वह हर संभव साधन का प्रयोग करता है। आदमी के दूत होने की स्थिति से उत्पन्न ग्लानि से वह मुक्त नहीं हो पाता, इसलिए सोचता है -- " काश " , सुजाता ही मुझे दूत होने की इस ग्लानि से और परिताप से मुक्त कर पाती "[१५]। वह सुजाता का अध्ययन करने की चाल चलता है, उसमें सफल भी होता है मगर जीतकर भी ग्लानिका शिकार हो जाता है। वह तटस्थ रहने के लिए विवश है। उसके भीतर का व्यक्ति जीवनानुभूति का आनन्द लेना चाहता है किन्तु लेखक होने के कारण तन्मयता के आनंदसे वंचित रहता है।

उदय के समान सुजाता लेखक होते हुए भी पूरी रुपसे जिज्ञासायुक्त जासूस नहीं बन पायी। वह उदय का अध्ययन करना, वह उसके अध्ययन का विषय है यह भूलकर, वह लेखक है यह भूलकर व्यक्ति उदय में आकर्षित हो जाती है, व्यक्ति को केंद्रित मानती है। वह सोचने लगती है -- " जब मैं उन्हें लेकर इतना सोचती हूँ, तो मुझे पूरा हक है कि उनके बारे में अधिक से अधिक

---

१३ राजेंद्र यादव - शह और मात - पृ.३०.

१४ राजेंद्र यादव - शह और मात - पृ.१०८

१५ राजेंद्र यादव - शह और मात - पृ.२९०

स्त्रोतों में जानू। आखिर मैं अपने जीवन से यों खिलवाड कैसे होने दूँगी ?"[१६] उदय के साथ जब घनिष्ठता का अनुभव करती है उसी वक्त उसे उदय की चाल के बारे में पता चलता है और वह ठगीसी रह जाती है। सुजाता उदय के अध्ययन का विषय ही नहीं बल्कि वह अपर्णा के अध्ययन के लिए माध्यम भी बनी हुई है। वह अंत में लिखती है। " तुम चाहो जिसको दूत बनो यह सब नहीं सहा जाएगा मैं तो तुमसे डोर का एक सिरा बनकर मिली थी ... कमंद का सिलसिला नहीं "[१७]

शह और मात में कथ्यतत्व न्यून है। लायब्ररी में सुजाता और उदय की पहली भेंट होती है, सुजाता उदय को घर आनेका निमंत्रण देती है, दोनो में बातचित होती है। आगे चलकर दोनों के बीच रागात्मक सम्बन्ध निर्माण होते है। सुजाता को उदय को 'लेखक' के रूप में जो प्रसिध्दि मिली है तथा उसकी भौंहे उसे तेज की याद दिलाती है, इसलिए वह उदय के प्रति आकर्षित होती है। तेज उसका प्रेमी था जिसने उसे धोखा देकर विदेश में जाकर ब्याह किया था। उदय के सम्पर्क में आनेतक लडकी का होने से वह उदय के जनाबी व्यक्तित्वसे टकराना चाहती है। वह उदय का अध्ययन कहानी के चरित्र की तरह करना चाहती है यह करते समय वह कभी 'युवती' सुजाता तो कभी 'लेखिका' सुजाता बन जाती है। अचेतन चेतन का व्दन्व्द भी उसके मन में चलता है। यादवजी ने सुजाता के इस व्दंव्द का मनोवैज्ञानिक चित्रण बडे कुशलतासे किया है। कभी कभी सुजाता में नारी सुलभ ईर्ष्या का भाव उभरता है तो कभी पुरुष को उंगली पर नचाने का भाव जागृत होता है।

आधुनिक समाज में नारी की हैसियत और उससे सम्बन्धित मूल्यमर्यादा

---

१६ राजेंद्र यादव - शह और मात - पृ.२६९

१७ -वही - पृ.२९२

की चर्चा `शह और मात' में हो गयी है। अर्पणा के साथ उसका पति पशुता का बर्ताव करता है, सुजाता के साथ फूलजी जैसे का व्यवहार या बुआ की टीप्पणी से जाहिर है कि `नारी' के प्रति पुरातन धारणाओं में थोडा - बहुत हेर-फार हुआ है। उपन्यासकार ने विसंगतियों से गुजरती एक आधुनिक नारीका चित्रण किया है।

उदय और सुजाता के सन्दर्भ में प्रेम,लगाव, आत्मीयता आदिपर भी विचार हुआ है। उदय इस पूँजीवादी समाज में व्यापारी हो जाने की शिकायत करता है, महानगरीय परिवेश इतना व्यस्त एवं जटिल बना हुआ है कि सम्बन्धों की कोमलता नहीं रही है। महानगरीय परिवेश की विसंगतियाँ `शह और मात' में कथ्य का हिस्सा बनकर रह गई है।

इस उपन्यास का कथ्यपक्ष जैसे सुंदर बना है वैसे शिल्पपक्ष भी अत्यधिक सुन्दर है। इस कहानी में घटनाएँ सीधी रुपमें नहीं आती वह स्मृतियों के रुप में उपस्थित की गई है, इन घटनाओंकी गति मंथर है। कहीं पर अर्पणा की पहाडी रियासतवाली कहानी ने विस्तार लिया है फिर भी वह मनोरंजक है।

पात्रों के रूपमें उदय और सुजाता महत्वपूर्ण है। शैली की दृष्टि से डायरी शैली का इसमें प्रयोग किया गया है। `उपन्यास' सुजाता की डायरी के रूप में प्रस्तुत किया गया है। अन्त में उदय की डायरी के फाडे हुए पन्ने भी दिए गये है। उपन्यास की भूमिका भी राजेंद्र यादव जी की डायरी के अस्ताव्यस्त पन्नों के रुप में उपस्थित है।

भाषा और शैली की दृष्टि से यह सफल उपन्यास है। कथानक का घटनास्थल बम्बई होने से ना-पास चाळ आदि कुछ शब्द आ गए है। बम्बई व्यापारी नगर है, इस नगर की व्यापारी वृत्ति के सम्बन्ध में भी बताया गया

है, कि यहाँ के लोग बातें नहीं करते, शब्दों को इन्वेस्ट करते है। सूक्ष्मतासे उपन्यासकार ने सभी बातों को लिया है।

'शह और मात' यह उपन्यास पढने के बाद ऐसा लगता है कि यह 'सस्ती रोमानी' कथा नहीं है। लगाव या प्रेम के कई अछूते और सूक्ष्म स्तर इसमें दिखाई देते है, बहुत ही सुन्दर बना हुआ है। (Sentence!)

(५) अनदेखे अनजाने पुल

अनदेखे, अनजाने पुल राजेंद्र यादवजी का पाँचवा उपन्यास है। इस उपन्यास में यादवजी ने कुरुपता की ग्रंथि से जकडी निन्नी का चरित्र चित्रण किया है। कालेपन की ग्रंथी से मुक्ति पाने की लालसा के कारण बचपन में पार्वती की पूजा करनेवाली अपनी कुरुपता किस ढंग से नष्ट करनी चाहिए इसलिए उपाय ढूँढनेवाली निन्नी के दर्शन उपन्यास के शुरु में होते है, मगर अंत में वह अपनी कुरुपता को स्वीकार करती है, तथा दर्शन के आत्मीयता पूर्ण चुंबन के स्पर्श में व्यक्तितत्व, के कायाकल्प का अनुभव कर सकने में समर्थ हो जाती है।

निन्नी काली लडकी है, बचपन से ही कुरुपता की भावना ने उसके मन में हीनता का भाव निर्माण किया था। बच्चे उसे 'काली कलूटी ... बैंगन लूटी .. भरे बाजार में धम्-धम् कूटी' कहकर चिढाया करते थे। बडी हो जानेपर भी वह उपहास का विषय बनी रही। लोगों में हमेशा यही चर्चा चलती कि बेचारी की शादी कैसे होगी ? उसे यह भी एहसास हुआ था कि माँ-बाप उसे प्रेम नहीं करते, सबके लिए वह दया का विषय बनी हुई है। इसी दया एवं हिकारत से उसे घृणा हो गयी थी। किसी परिचित या अपरिचित व्यक्ति के सामने आ जानेपर हीनता की भावना के कारण उसे अपमान की आशंका सताती रहती। वधू परीक्षा में नाकामयाब कर दिए

जानेपर वह अपमानित होकर यह सोचती है कि दुनिया की किसी चीज को पाने का उसे हक नहीं है क्या ? गृहस्थी का सुख उसके नसीब में नहीं है क्या ? इस कालेपन से क्या वह छुटकारा नहीं प्राप्त कर सकती इसलिए वह वैज्ञानिक प्रगति का सहारा लेना चाहती है, मगर उसमें उसे व्यर्थता अनुभवित होती है।

निन्नी को जब यह महसूस होता है कि किसी भी उपाय से उसकी कुरुपता नष्ट नहीं होगी तब वह अपने कालेपन में आत्मसमाधान खोजने का प्रयत्न करती है। बचपन में कालेपन पर चिढ़ाये जाने पर वह कहती -- ' काले काले रामजी के प्यारे ... काला तो भगवान जी का रंग है '[१८]। वह सोचती न सही गोरा रंग पर उसके बाल क्या कम सुन्दर है ? बहुत लम्बे है। वह आत्मीक सौंदर्य को महत्व देने लगी, हमेशा प्रसन्न रहने की कोशिश करती। किसी काले चेहरे पर नमक खोज निकालने में उसे संतोष मिलता और गोरे व्यक्ति की कुरुपता को खोज निकालने में क्रूर संतोष मिलता।

लेकिन फिर भी उसे लगने लगता है उसकी यह प्रसन्नता नकली है अंदर से कुरुपता की ग्रंथि उसके मन को कुरेदती रहती और उसकी हीनता ग्रंथि बढाने का काम पास पडोस वाले, स्कूल के लडकी लडकियों का हाथ और भी सहायता करता। घर में माँ उसकी भविष्य को लेकर हमेशा चिंतित रहती थी।

बेजलवाले प्रसंग ने निन्नी को एक नए मार्ग की ओर प्रवृत्त कर दिया। उसके साथ घटी घटना ने उसमें प्रतिक्रिया के भाव पैदा किए। संध्या केवल सुन्दर और गोरी होनेसे उसे सर्वसुख क्यों उपलब्ध हो, और उसे वह कुरुप है इसलिए कुछ न मिले।

निन्नी के जीवन में ' चुंबन ' के दो प्रसंग आये। बेजलने संध्या के भ्रम में जब निन्नी को अँधेरे में बाँहो में कसकर चूमा तो उस चुंबन की अनुभूति ने उसके

---

१८ राजेंद्र यादव - अनेदेखे अनजाने पुल - पृ.

अस्तित्व को चीरसा दिया मगर उसमें संपूर्णता का सुख नहीं था। बेजल का यह चुंबन उसे वर्जित, कुत्सित, वर्जनीय, बातों को करने के लिए उकसाता है। उसमें अशिष्टता आ जाती है, जिसका परिणाम उसके चेहरे पर क्रिम-पाउडर आ जाता है, कालिज के लडकों को जीभ दिखाकर मुँह बिराती है। मुँहफट इतनी बन जाती है कि, खुलकर कटु सत्य कह देती है -- ' अच्छे नम्बरों से पास होने के लिए, प्रोफेसरों की तारीफ के लिए गोरी चमडी की आवश्यकता है। जितनी ये ऊँची ऊँची तारीफ पानेवाली लडकियाँ है उनके गिरेबान में झाँककर देखना, वे सचमुच प्रतिमा और योग्यता से पहुँची है।'[१९] यह पहले चुम्बन की प्रतिक्रिया उग्र और आक्रमक थी। इसलिए वह उसके जीवन में उल्लेखनीय महत्व नहीं रखता। लेकिन दर्शन के चुम्बन ने उसमें साहस भर दिया, यह उसके जीवन में होनेवाला दूसरा चुंबन था।

दर्शन यह निन्नी के बडे भाई का दोस्त, दिल्ली में रहनेवाला, जब निन्नी भाई के साथ दिल्ली ' नुमाइश ' देखने चली गयी थी उसी वक्त वे दर्शन के यहाँ ठहरे थे। दर्शन के परिचय के बाद निन्नी अपने लिए एकदम अपरिचित हो उठी। आजतक कुरुप निन्नी को देखकर परिचित या अपरिचित व्यक्ति दया या घृणा का भाव व्यक्त करते थे, उसे देखकर उनके आँखोंमें आश्चर्यमिश्रित धक्के के भाव उमड आते थे। लेकिन प्रथम भेंट में दर्शन में वे परिचित भाव निन्नी को नहीं दिखाई दिए बल्कि उसकी जगह उसे आत्मीयता एवं मधुर खुलापन दिखाई दिया। इसी वजहसे उसकी हीनता की ग्रंथि शिथिल बन गयी। दर्शन के खुलेपन के व्यवहार से एवं दोस्ती के कारण वे दोनों आपस में इतने खुल गये कि वे पुराने मित्र हुए। निन्नी में एक नया उत्साह, जीवन की एक नयी उमंग पैदा हो गई, दिल्ली से लौट आने पर दर्शन के साथ उसके पत्रव्यवहार भी चलते थे। वह दर्शन को भुला नहीं पाती थी मगर उसका भाई रम्मी तथा दर्शन के बातचित से उसे यह मालूम हुआ कि

---

१९ राजेंद्र यादव - अनदेखे अनजाने - पुल - पृ.११२

दर्शन अपनी प्रेमिका से विवाह करना चाहता है तो वह निराश हो जाती है। उसने अपने को कोसा कि वह कैसी भूल गई कि दर्शन यह कलाकार है, जो शायद गंदे पुल से होकर किसी भी सौंदर्य लोक में जाना गँवारा न करेगा, गंदा पुल अर्थात ' निन्नी '। इसप्रकार के चिन्तन के कारण ही जब दर्शन ने निन्नी के प्रोफाईल होने की बात कही तो निन्नी बिगडकर बोली -- ' तुम्हें अपनी कला के खिलवाड के लिए तो मेरा चेहरा चाहिए ? '[२०] निन्नी का कहना था कि मेरा प्रोफाइल बनाकर तुम नीचे लिख दोगे' काली कुरूप लडकी '। दर्शन के सम्पर्क में आनेपर निन्नी का अपनी कुरुपता का एहसास कम होने लगा, वह अपने गुणों के माध्यम से उसके मनपर अधिकार करना चाहती है। दर्शन की प्रेमिका के संबंध में जान लेने पर भी वह अपनी भावनात्मकता के सहारे आकर्षित करना चाहती है, मगर जब दर्शन ने अपने विवाह की सूचना पत्रव्यवहार व्दारा दी तब वह टूट जाती है। अपने ' अंर्तव्यक्तित्व को ' दर्शन ने ठुकरा दिया यह भावना उसके मन को कुंठित करती है। वही से निन्नी निराश बन कर,अपने शरीर को कष्ट देने लगती है। जाडों के दिनों में गरम कपडे न पहनने से उसे निमोनिया हो गया, इसी बीमारी की अवस्था में दर्शन उसे मिलने अचानक आ जाता है। अपनी कुरुपता के कारण तंग निन्नी ने जब दर्शन के सामने मरने की इच्छा व्यक्त की तो दर्शन ने कहा -- ' अनुपात सुन्दरता नहीं है, अनुपात के पीछे उद्भासित होनेवाला प्राण ,प्रसन्न,उत्साह और आस्था ही सौंदर्य है '[२१] विदा होते समय दर्शन ने निन्नी के होठों को चूम लिया । दर्शन के प्रीतिकर चुम्बन के प्रभावस्वरुप निन्नी के मनका तनाव समाप्त हो गया। दर्शन का चुम्बन वैजल के चुम्बन से भिन्न था। वैजल का चुम्बन किसी अन्य के प्रति निवेदित था,जिसे गलती से निन्नी ने पाया था। दर्शन का चुम्बन ' आत्मीय ' और अंतरंग सम्बोधन था,जो निन्नी को बंधु और मनुष्य मानकर अपना सपज कर दिया था।

---

२० राजेंद्र यादव - अनदेखे अनजाने पुल - पृ.

२१ -वही- - पृ.१७३

बीमारी से मुक्त हो जानेपर उसके मन में यह ख्याल आता रहता कि अपना भी कोई घर हो लेकिन इस बात का संतोष रहा कि - ' जिंदगी की जो कुछ भी पूंजी उसे मिली है, उसे सही दिशा में ही लगायी है, और जितना कुछ बन पडा है अपने को अवरुध्द रखनेवाली सीमाओं को लाँघने की कोशिश की है '[२२] बाद में वह पढी ,नौकरी की और उसने जीवन में संतोष पाया ।

इसप्रकार राजेंद्र यादवजी का प्रस्तुत उपन्यास प्रणयानुभूति के अछूत संदर्भों को उद्घाटित करता है। इसका कथानक तीन विभागों में विभाजित है वे इसप्रकार ' नुमाइश और नुमाइश ', ' उतरती सीढियों के अंधेरे मोड ', और ' बीमार पंगडडी ' । उपन्यास में निन्नी के मानसिक व्दंन्व्द की अभिव्यक्ति सफलता के साथ हुई है। बडी ही मनोवैज्ञानिकता के साथ पात्रों के व्यक्तित्वों को उपस्थित किया गया है। तथा दर्शन और निन्नी के पत्रों को उपन्यास की शैली के अंगरुप में बडी सुंदरतासे चित्रित किया है। कम कथानक होते हुए भी पाठक को बांधने की क्षमता प्रस्तुत उपन्यास रखता है।

(६, मंत्रविध्द —

' मंत्रविध्द ' राजेंद्र यादव का छठा उपन्यास है। इस उपन्यास का कथ्य घटित और घटनीय के बीच का ' तनाव क्षण ' है। इस तनाव का सबसे अधिक शिकार तारकदत्त है। उसकी आयु लगभग सत्ताईस अठ्ठाईस की होगी। उसका बचपन और कैशोर्य बनारस में बीता है। नाम से ही स्पष्ट है वह बंगाली आदमी है। उसका विवाह सोलह सत्रह वर्ष की आयु के पहले हो गया था। उसकी बनारसवाली बीबी के तीन बच्चे भी है, जिनकी उम्र क्रमश: ग्यारह, छह, और तीन साल की है। इससमय वह दिल्ली के एक लडकियोंके प्राइवेट कॉलेज

---

२२ राजेंद्र यादव - अनदेखे अनजाने पुल - पृ.२६०

में पढाने की नौकरी कर रहा है।

`मंत्रविध्द` में एक प्रेमप्रसंग के माध्यमसे आधुनिक महानगरीय परिवेश में सम्बन्धों के बनने, तनने और बिगाड की हदतक पहुँच जाने के यथार्थ का चित्र उभरा है। मंत्रविध्द के कथानक में न्यापन है। ...` इसमें घटना या घटनाएँ नहीं है कहानी न सिर्फ व्यक्ति के भीतर चलती है बल्कि दोनों स्तरपर चलती है। इसमें एक ही स्थिति के कई पहलू है, मानो सिक्केको उलट-पुलट कर उसके हर हिस्से को देखा गया हो।[२३]

तारकदत्त बंगाली होने से भावुक नहीं` गलदश्रु ` भावुक है। इसी भावुकता के कारण वह शादीशुदा होते हुए भी सुरजीत को प्यार करने लगा है। उसी तात्कालिक आवेश में वह आर्यसमाज में जाकर सुरजीत से विवाह करता है। विवाह से पूर्व वह अपने अविवाहित होने की सूचना आर्यसमाज को देता है। विवाह हे बाद सुरजीत को लेकर दिल्ली आ जाता है। प्यार के आवेश में सुरजीत को भगा तो ले आया मगर सुरजीत के पिता का आतंक उसके सिरपर सवार हो गया। सूरजीत के पिता सूरवॉर आदमी है। जिन्होंने पाँच आदमियों को अपने हाथ से मारकर जला डाला था। तारक डरपोक भी बहुत है। शेर मारने की कहानी उसके डर को देखते हुए कायर के क्षणिक आवेश की बात लगती है। वह स्वयं कहता है --` पता नहीं कैसे शेर मार लिया लेकिन हम बहुत डरपोक है।`[२४] इसीप्रकार शायद प्यार के क्षणिक आवेश में वह सुरजीत के साथ दिल्ली में भाग तो निकलता है, किंतु उसमें प्यार को निभाने का फैसला निभाने की ताकद नहीं है। उसे हमेशा डर लगता रहता है कि ससुर के आदमी पीछा कर रहे है। वह सुरजीत को अपने साथ बाहर ले जाने में डरता है, बाद में उसका डर इतना बढता है कि

---

२३ समीक्षा - अप्रिल - १९६८- पृ.०३

२४ राजेंद्र यादव - मंत्रविध्द - पृ.७१

सपने में भी उसे लगता है जैसे छुरा टेंटुए पर रख दिया गया है। डर के मारे नींद में ही उसके गले से घर्र-घर्र की आवाज निकलने लगती है। दिल्ली लौटते समय तो आतंक के मारे वह सूनी आँखो से निवेदक को देखता ही रह जाता है।

तारक के मन का तनाव मौत के आतंक के कारण है। उपन्यास के पात्र भी अलग अलग कारणों से कम ज्यादा तनावग्रस्त है। सुरजीत हुल-मुल स्थिति से तंग है। वह स्वयं निवेदक से कहती है कि मै, ' इतनी ज्यादा ' डिस्गस्टेड ' हो गयी हूँ कि डर लगता है कहीं कुछ कर न डालू ' २५ मेजबानों का तनाव कई कारणों से है। मेहमान कुछ ऐसे बुरे है कि बिजली पंखे आदि का दुरुपयोग उन्हें दिखाई नहीं देता। मेजबान की असुविधाओंका विचार वे नहीं करते। व्यवहार में नबावी ऐसी है कि मेजपर रखा अखबार उठाकर देने के लिए नौकर को पुकारते है। निवेदक को लगता है कि काम के बोझ के कारण नौकर कही काम न छोड दे। सुरजीत घर के काम में हाथ बँटाना चाहती है, परंतु तारक उसे डाँट देता है और अपने पास बिठाए रखना चाहता है। मेहमानों के खाने पीने को लेकर इन्दु के मनमें कमीनी बातें आती है। महीने का घी और आटा अगरह तारीख को ही समाप्त हो जाता है। मध्यमवर्गीय परिवार में आर्थिक खर्च की वजहसे परेशानी निर्माण ही होती है। बैठक पर मेहमानों के कब्जे कारण मेजबान दम्पति अलग तनाव में है। मेहमानों की उपस्थिति के कारण उनके जाने की प्रतीक्षा में अनेक कार्यक्रम स्थगित करने पड रहे है। उन्हें महसूस होने लगता है कि आतिथ्य उनका अपना नहीं है और न उनकी अपनी वैयक्तिक जिंदगी ही बाकी रह गई है। मानसिक तनाव के कारण उन्हें मनोरंजन आवश्यक लगने लगता है। जब वे सिनेमा देखने के लिए जाते हैं तो मेहमानों की बात को अपने बीच में शुरु न होने देने के लिए प्रयत्न करते है। सिनेमा के बाद वे कुछ देर तक घर जाना

---

२५ राजेंद्र यादव - मंत्रविध्द - पृ.९५

टालते है। उन्हें ऐसा लगने लगता है जैसे वे स्वयं अपने घर में मेहमान है। घर आने में देर करनेपर उन्हें लगता है कि कहीं वह भाग तो नहीं गया। दूसरी ओर लडकी को भगाकर लाए जाने के इस प्रसंग में वे कहीं बेकार ही कटकट में न फंस जाएं।

तारक के घर पर न होने पर घर का वातावरण कुछ सहजसा हो जाता है। एक दूसरा ही तनाव उभार सा आता है मेहमानों के आने से पहले ही रात को ही मोहन और इंदु के बीच पूर्णिमा प्रसंग से तनाव बढ गया था। इस प्रसंग के कारण इंदु प्राय: कहा करती रही है" आदमी की बात तो एक बार मैं मान सकती हूँ कि वह कुत्ते की तरह सब जगह मुँह मार सकता है, लेकिन वो औरतें कैसी होती हैं, जो जानते बुझते अंधी हो जाती है, दुसरी का घर तोडती है। उन्हें दूसरी औरत के दुखदर्द का बिलकुल भी ख्याल नहीं आता --"[२६] पूर्णिमा प्रसंग के कारण मोहन और इंदु अपरिचित हो उडे थे।

मोहन ने तारक और सुरजीत को` शरण` और` सहायता` देने की भावना के पीछे अपने मन की अवचेतन में छिपी इस भावना को पाया है कि अगर मैं पूर्णिमा के साथ भागकर इस स्थिति में होता तो क्या आशा करता।

तारक और सुरजीत के दिल्ली रवाना हो जाने के बाद मोहन और इंदु के बीच स्थगित तनाव फिर से सजीव हो उठा। क्यों कि उन्हें तात्कालिक रुपसे जोडनेवाला सूत्र सहसा अनुपस्थित हो गया था। मेहमानों की उपस्थिति के तात्कालिक तनाव ने शाश्वत तनाव को स्थगित मात्र किया था पूर्णिमा - प्रसंग का महत्व मोहन और इंदु के बीच की स्थिति को तारक के तनाव की पृष्ठभूमि के रूप में उपस्थित करने का ही नही है, अपितु मोहन और इंदु के बीच के वैवाहिक जीवन के शाश्वत तनाव को तारक और सुरजीत के प्रसंग के बहाने समझने का प्रयत्न भी है।

---

२६ राजेंद्र यादव - मंत्रविध्द - पृ.२७

तनाव को बहलानेका प्रयत्न मनुष्य करते है वह प्रयत्न मोहन तथा तारक भी करते है - तारक मोहनसे कहता है -' आप उसे (ससुर) को जानते नहीं है। इतनी आसानी से पीछा छोडनेवाला नहीं है ... वरना तारक बाबू आज आपके सामने बैठे होते ? अजी राम का नाम लो, कहीं पडे हुए चील कौवों को मोज दे रहे होते '[२७] मोहन के तनाव को विनोद में बहलाने का एक प्रसंग देखिए मोहन और इंदु के सिनेमा देखकर देर से लौटने के बाद जब सुरजीत ने घर का दरवाजा खोला, तो मोहन ने हंसकर कहा, ' मुझे तो तुम्हारा दरवाजा खोलकर हमें लेना ऐसा लगा' जैसे हम तुम्हारे यहाँ आए है' ...।[२८] अपने हीघर में मेजवान के मेहमानसा बनने की स्थिति की कटुता को विनोद के आवरण में तो उपस्थित किया गया है, कटुता की कचोटको बहलाया गया है।

मंत्रविध्द का कथानक अत्यन्त संदिप्त है। यह कुल सात दिनों की कहानी है। इसमें कथानक के शिल्प की विचित्रताओंका समावेश बहुत कम है। पाँचवे दिनकी कहानी में ही कालविपर्यय के सहारे अव्यवाहित पूर्वरात्रि की घटना या बातचित उपस्थित की गई है। अन्यत्र तारक के पूर्ववृत्त की घटनाएँ बातों ही बातों में उद्घाटित हुई है। इस उपन्यास की कहानी में घटनात्मक विविधता और आकस्मिक संयोगोंकी विचित्रता के सहारे कहानी को मनोरंजक बनानेका प्रयत्न नहीं किया गया।

कथानक को दिलचस्प न बनाकर राजेंद्र यादवजी ने पात्रों के मानसिक मंथनपर ध्यान दिया है। तनाव विषयक विश्लेषण ही दिया गया है। तारक पंजाबी लडकी सुरजीत के जादू में फंस गया है। उपन्यास के प्रारंभिक भाग में वह एक स्थानपर कहता है -' हमने तो सारी जिंदगी दाँवपर लगा दी तो न उनके रुपयोंसे डरते है न खुद उनसे २९. ' वैसे आगे चलकर दिखाई

२८ राजेंद्र यादव - मत्रविध्द - पृ.८३
२९ -वही- पृ.३१

देता है कि प्यार के नामपर शहीद होने की बातें करने वाले तारक में साहस का अभाव है। इसके अतिरिक्त वह निर्णय दुर्बल है। कही कहीं मोहन को उसमें लालच की ग्रंध आती है वह शक्की भी है। सुरजीत को कहीं पुरुषोंके बीच नौकरी नहीं करने देना चाहता। अपने साथी गोयल को जबर्दस्ती राखी बांधने के लिए सुरजीत को प्रेरीत करता है इस प्रकार की बातों की बावजूद सुरजीत कहती है -- " अगर मैं चली गई तो हुगली में डूब मरेंगे "[३०] ऐसी स्थिति में भी तारक सुरजीत के प्यार के मंत्र से बंधा हुआ। सुरजीत के साथ दिल्ली के लिए रवाना हो गया है।

उपन्यास का दूसरा पात्र सुरजीत है। वह तारकपर मुग्ध है। वह सामान्य पंजाबी लडकियों के विपरीत भावुक है। अगर सुरजीत हिम्मत न करती तो तारक में उसे अपने साथ भगा ले आनेका सामर्थ्य नहीं था। सरदार की बेटी होने का गर्व उसे है पर उस विचारसे वह आतंकित नहीं है।

प्रस्तुत उपन्यास का निवेदक केवल तारक और सुरजीत की कहानी ही नहीं कहने बैठा है, वह इस कहानी के बहाने अपनी समस्या भी सुलझाना चाहता है। उसने अपने मनकी झाकियाँ भी साथ साथ दी है। वह कहीं अपने अंतर्मन में सूरजीत की ओर आकृष्ट है। सिनेमासे लौटकर घर आते ही सुरजीत के सामने उसका सारा गुस्सा न जाने कहाँ उड जाता है। इंदु शायद यह भाँप गयी है कि सुरजीत कहीं मोहन को अच्छी लगती है। उसकी खिन्नता को पैदा न होने देने के लिए मोहन जब तब सुरजीत की तारीफ को दबा देता।

पात्रों के मनोविज्ञानको राजेंद्र यादव ने बडी बारीकी से समझाया है। उपन्यास में सिगरेट पीने की छोटीसी बात को ही उदाहरण के रुप में ले सकते है। तारक जब मोहन की सिगरेटें एक के बाद एक पीने लगता है, तो बची हुई सिगरेट पर तारक हाथ न मारे इसलिए जरूरत न होनेपर मोहन सिगरेट

---

३० राजेंद्र यादव - मंत्रविध्द - पृ.९६

पी लेता था। उसे यह अच्छा नहीं लगता खुद की सिगरेट की डिब्बिया होकर वह खुद दो या तीन ही ले। किंतु जब तारक अपने खरीदे हुए पैकेट से सिगरेटें पीने लगता है, तो सोचता है -- ' मेरा क्या है जितना चाहें फूंके... इस बार तो उसका अपना ही पैकेट हैं '[31]। ऐसे अन्य उदाहरण भी है।

भाषा और शैली की दृष्टि से शीर्षक से लेकर ही उनकी विशेषताएँ नजर आती है। तारक सुरजीतके प्रसंग में मंत्रविध्द की तरह सबकुछ करता दीखता है। प्रेम के मंत्र से बिंधे हुए व्यक्ति के मन के उल्लास, अनुरक्ति, और साहस को बहुत मूल्यवान ठहराया गया। तारक सुरजीत दिल्ली से पलायन करते है, जैसे वे होशो-हवास में न होकर किसी मंत्र के प्रभाव में हो। इंदु ने उपन्यास के आरंभ में एक स्थानपर कहा है -- ' अभी तक यही मशहूर था कि बंगाल की औरतें जादू से मेढा बना देती है, पंजाब की कुड़ियाँ भी मंत्र जानती है, यह भीतो पता चल गया '[32] निवेदक ने प्यार की क्लासिक अनुभूतिको समय सोचा है -- ' प्यार .. जो मंत्र के प्रभाव की तरह आदमी की आत्मा को छाए रहता है ' --... ।[33] तारक मंत्रविध्द सांप की तरह सुरजीत के प्रभाव में हो। सांप काम प्रेम का प्रतीक है। एक अन्य स्थानपर प्रतीक का सुन्दर प्रयोग इस प्रकार है। दिल्ली लौटते समय तारक जहाँ रेल में बैठा है, वहीं तारक के सिर के उपर, किंतु पटे खडी रेल के डिब्बे पर ' क्रूस ' का निशान है।

प्रस्तुत छोटे उपन्यास में कुछ एक स्थानोंपर प्रसंगत: शौर्य, विवाह, प्यार, आदि पर अनुकूल या प्रतिकूल प्रतिक्रियाओंपर चिंतन हुआ है। चिंतनों के ये प्रसंग प्रकरणगत अर्थातरन्यास के उदाहरण है। उपर ' महान ' और ' पवित्र ' की पीड में छुरा मारकर उसे लेक में फेंककर घर चले जाने के प्रसंग का उल्लेख है। इस प्रसंग में विशेष का सामान्य से समर्थन किया गया है।

---

३२ राजेंद्र यादव - मंत्रविध्द - पृ.१४

३३ -वही- - पृ.९०

उपन्यास में अप्रस्तुत - योजना के कुछ स्थल अत्यंत मोहक है। प्यार की क्लासिक अनुभूति के प्रसंग की अभिव्यक्ति तथा जोश में आकर प्यार की कुप्पीक, मुँह तो खोल लिया, लेकिन जब उसमें निकलकर राक्षस सामने आ खडा हुआ तो हाथपाँव फूल गये "३४। भाषा के स्वरुप की दृष्टीसे देखने पर पात्रोंकी भाषा में जिवनकी सजिवता है। तारक और सुरजीत के कलकत्ता आ जाने से मोहन को, 'इल्लत', 'डोल सुलटाना' आदि यू.पी.के जन जिवन मे प्रचलित शब्द सुनने का अवसर मिला है। सुरजीत 'जला देने' के अर्थ में पंजाबी का 'सडा देना' प्रयुक्त करती है।

शब्दों को इकहरे अवतरण चिन्ह में रखने की प्रवृत्ति यहाँ भी मिलती है। तारक ने सुबह सुरजीत के सारी रात चिठ्ठियां लिखने की शिकायत-सी की है। इस प्रसंग में निवेदन ने कहा है --' लगा, वह सफाई दे रहा है, कि रात भर वह सोया है और सुरजीत चिठ्ठियाँ लिखती रही है। उन्होंने कुछ नही किया। "३५ राजेंद्र यादव के लेखन में उध्दरणों के प्रति झुकाव दिखाई देता है। इस उपन्यास में एक दो उध्दरण है, पर विशिष्ठ प्रवृत्ति के रूप में वे नहीं है। बुरे ढंग के मेहमानों के प्रसंग में कहा गया है--' किसी ने कहा था कि ये लोग देवी वी.पी. से आते है और उनका पूरा, भुगतान करके छुडाना आपका कर्त्तव्य हो जाता है।"३६ ' इसी प्रकार' महान' और 'पवित्र' की पीठ में छूरा मारने की भावना के प्रसंग में निवेदन ने उद्धृत किया है।' किसी ने कहा था, हम अपने निकटतम को ही सबसे गिरा और विपिन्न देखना चाहते है। ताकि उससे बडे होनेका सुख पा सके। इन दोनों ही स्थानोंपर किसीने कहा था' का प्रयोग है, जो उध्दरणों के प्रति अतिरिक्त सजगता के अभाव को सूचित करता है।३७ राजेंद्र यादव के उपन्यासों में

---

३४ राजेंद्र यादव - मंत्रविध्द - पृ.१०३

३५ -वही- पृ.४४

३६ -वही- पृ.४१

३७ -वही- पृ.१०५

`मंत्रविध्द` अपनी समस्या से सीधे जूझने की प्रवृत्ति एवं जीवन की यथार्थ भाषा के कारण अधिक विशिष्ठ बन पडा है। शिल्प की विचित्रता का आग्रह आद्यंत नही है। उध्दरण अदि के मोह से लेखक सर्वथा मुक्त है। यह लघु उपन्यास अपनी पूरी चुस्ती के साथ घटित और घटनीय के बीच के तनाव को रखने में समर्थ हुआ है। स्वयं राजेंद्र यादव इसे अपना सर्व श्रेष्ठ उपन्यास मानते है। राजनाथ शर्मा ने इसे `कमजोर संतान` न जाने कैसे कह दिया है, बिना पढे निर्णय देने मे उन्हें संकोच होना चाहिए था। क्योंकि उन्होंने इस उपन्यास को न पढने की सूचना भी दी है।[३८] इस तरह उपन्यास की पूरी दुनिया, जो यथार्थ के एक महत्वपूर्ण टुकडे की बहुत सलीके से सीमित अनुभव संसार के दायरेमे ही सही कलात्मक प्रस्तुतिका सुफल है, अविश्वसनीय नही लगती।

(७) एक इंच मुस्कान --

`एक इंच मुस्कान` यह राजेंद्र यादवजी एवं मन्नू भंडारी का दोनों पति-पत्नी का सहयोगी उपन्यास है। इस उपन्यास में एक ही समय स्थिति को पात्रों के भिन्न कोणों से देखा गया है। नारी पात्रों को मन्नू ने अपने और पुरुष पात्रों को राजेंद्र यादवजी ने समानांतर चलाया है। पहले यह उपन्यास मन्नू जीने लिखा था उसमें `अमल` की कहानी थी मगर दोनों ने लिखने के बाद वह `अमर` की कहानी बन गई। अमर स्पष्टा साहित्यकार है, उसके माध्यम से राजेंद्र यादवजी ने लेखकीय व्यक्तित्व की समस्यापर विचार किया है।

कलाकार का व्यक्तित्व अपनी कला साधना के प्रति समर्पित हो तभी वह अपनी कला को निखार सकता है। कलेतर क्षेत्र की जिम्मेदारीयाँ उसे कलाकार की निस्संग दृष्टि से वंचित रखती है। इसलिए कलाकारों को जिम्मेदारीयों से मुक्त रहना चाहिए। अर्थोपार्जन के लिए अगर कलाकार नौकरी

---

३८ राजेंद्र यादव - मंत्रविध्द - पृ.२५

करे तो वह नौकरी की जिम्मेदारी से बंध जाता है, इसीकारण से रंजना अपने अमर को इन्ही जिम्मेदारीयों से मुक्त रखना चाहती है क्यों कि वह मुक्तता से अपनी कला साधना के ओर ध्यान दे। मगर अमर यह पुरुष है उसके अहं को यह कैसे स्वीकार हो सके ? अगर जिम्मेदारी से मुक्त रहने के लिए नौकरी नहीं करनी और अहं की सुरक्षा के लिए किसी का आश्रित बनकर नहीं रहना तो रुपया कमाने का एक साधन लेखन है, मगर वह भी सम्मानजनक हो तो ही रुपया मिल सकता है। अमर लेखन को स्वतंत्र एवं सम्मानजनक पेशे के रुप में अपनाना चाहता है। इस उपन्यास का कथानक चौदह अध्यायों में विभक्त है। इसमें विषम अध्याय राजेंद्र यादवजी के है तथा सम अध्याय उनकी पत्नी मन्नू जी ने लिखे है।

प्रस्तुत उपन्यास में तीन प्रमुखतम् पात्र है, अमर, अमला एवं रंजना। अमर के माध्यम से राजेंद्र यादवजी ने लेखकीय व्यक्तित्व की समस्या को समझाने का प्रयत्न किया है। व्यक्ति और लेखक का व्दन्व्द अमर के चरित्र का केंद्रिय तत्व है अमरने रंजना से विवाह किया मगर बाद में उसने पाया कि रंजना और उसका लेखन पूरक नहीं है। अमर की महिला मित्रों को रंजना सहजता से स्वीकार नहीं कर सकती। दोनोंके जीवनमूल्य भिन्न थे। रंजना के पजेसिव व्यक्तित्व के कारण अमर की घर में हैसियत पति की होते हुए भी कार्य पत्नी का हो गया था। वह अपने ही घर में मेहमानसा बना हुआ था। अमर विवाह को साधन मानता था और रंजना विवाह को साध्य समझती थी। अमर ने रंजना को इसलिए चाहा था कि वह अपनी साधना को दुगुणी शक्ति और निष्ठा से चलाए रख सके "[३९]।

उपन्यास में और प्रमुखतम पात्र अमला है वह अमर की प्रेरणा है। अमला का व्यक्तित्व खो जानेवाला है, कुछ विशिष्ट बनने का अहंकार उसमें मौजूद है, इसी अहंता के कारण पुरुष की पूर्णता को वह स्वीकार नहीं कर पाती। अमला यह परित्यक्ता है, पिता दूसरा विवाह कर देने की बात

---

३९ राजेंद्र यादव - मन्नू भंडारी - एक इंच मुस्कान - पृ.३००

सोचता है मगर अमला उस बात का स्वीकार नहीं करती और अकेला रहकर ही जीवन यापन करने का निश्चय करती है। अमर और उसमें पत्र के जरिए पहले सम्बन्ध स्थापित हो गया था। अमर से उसकी मुलाकात पत्रों के जरिए ही होती थी, आगे चलकर दोनों में मेलजोल बढ जाता है, अमला की रिक्तता, और पीडा अमर के मन को उद्वेल्लीत कर देती थी। अमर के लिए रंजना और अमला दो मूल्य थे, और इन दोनों की संगति न बैठा पाना अमर के द्वन्द्व का मुख्य कारण है। एक ओर `रंजना` जो अमर की विवाहपूर्व दोस्त एवं प्रेयसी थी जिसने अपनी जिंदगी उसके लिए दांवपर लगायी थी, ऐसी यह रंजना अमर के लिए जिम्मेदारी, सुविधा और संस्कारबध्दता, कुछ, मिलाकर मानवीय नैत्विकता बोध थी, तो दूसरी ओर `अमला` है यानि कि वर्जनाओं, बंन्धनों से मुक्ति की कामना पर स्वतंत्र ख्यालात की है कलाकार के लिए विवाह का बंधन वह कैद मानती है इसलिए एक बार वह अमर को पत्र में लिखती है -- `कलाकार बंधकर नहीं रहता, वह तो उन्मुक्त धार है .... एक धरती उसे बांध लेगी तो वह धार कहाँ रह जाएगा ? पोखर और तालाब हो जाएगा और पानी सह जाएगा` ४० इस पत्र को पढकर अमर सोचने लगता है, रंजना उसे अपनी गृहस्थी के सुख के लिए प्यार के नाम पर बांध लेना चाहती है। मगर व्यक्ति के क्षण में अमर के लिए रंजना अनिवार्य है, वही बतौर लेखक वह अमला की उपेक्षा नहीं कर पाता था। रंजना के प्रति उसकी निष्ठा एवं आत्मीयता में कमी नहीं है, फिर भी उनमें अलगाव है यह कटु सत्य है। अमर अपनी में डूबी रंजना से समायोजन नहीं कर पाता, रंजना अपने दायरे से बाहर आना नहीं चाहती। उसे एहसास है कि उसके पास सलीके से सजा घर और शिष्ट तथा प्रियदर्शन पति है, उसके पास कुछ विशिष्ट है, अमर उसके मुकाबले में बहिर्मुख है और उसके सपने में सजा हुआ घर या बाहरी दिखावटी चीजे कुछ अहमियत नहीं रखती क्यों कि उसका व्यक्तित्व

---

४० राजेंद्र यादव और मन्नू भंडारी - एक इंच मुस्कान - पृ.६८

`यायावरी` है इसलिए अमला से यायावरी व्यक्तित्व के प्रति वह खींचता है मगर दो यायावरी व्यक्तित्व निश्चय ही एक साथ बंधकर नहीं रह पाते।

अमर रंजना से पूर्णरुपसे निरपेक्ष हो जाता है इसलिए रंजना को गर्भपात करने के लिए वह स्वीकृति भी देता है, यही बात दोनों में और भी दरार निर्माण करती है।

अमर के जीवन में रंजना और अमला दोनों स्त्रियाँ अपने अलग अलग व्यक्तित्व को लेकर आती है मगर यह दोनों भी उसके जीवन में रह नहीं पाती अमर के जीवन में हमेशा के लिए तरल अंधकार ही रह जाता है, एक इसी जगत् में रहकर हमेशा के लिए दूर चली जाती है वह है रंजना तथा अमला इस जगत् को छोडकर ही चली जाती है। रंजना,अमला से बिछुडने के पाँच साल बाद भी उसकी भटकन खत्म नहीं होती. यही हमें उपन्यास के अंत में दिखाई देता है तथा स्पष्ट व्यक्तित्व की उच्चतर मुक्तिकामना की अभिव्यक्ति व्यक्त की है।